शोध मंथन Vol. XI No.III July-Sept. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

'हिन्द की चादर'– श्री तेग़ बहादुर जी का सिख कला में जीवन दर्शन

डॉ0 कविता सिंह
सहायक प्रोफ़ेसर (स्टेज–III)
सरदार शोभा सिंह डिपार्ट्मेन्ट ऑफ फॉइन आर्ट,
पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला
Email: singhart6@gmail.com

सारांश

इस शोधपत्र में सिखों के नौवें सिख गुरू –'श्री गुरू तेग़ बहादुर जी' जिनका 400वां प्रकाश उत्सव पूरे देश व विदेशों में इस वर्ष श्रद्धा व भक्ति–भाव से मनाया जा रहा है आप को 'हिन्द की चादर' का सम्मान देत हुए हर भारतीय गौरवान्वित महसूस करता है क्योंकि आपने हिन्दू धर्म की रक्षा करते हुए हँसते–हँसते अपने शीश का बलिदान दिया था। इस शोधपत्र में गुरू जी के जीवन–काल की प्रमुख घटनाओं व सिख इतिहास के सुनहरी पन्नों में संजोये हुए कुछ ऐसे पलों का विवरण किया गया है तथा सूक्षमता व गहरी रूचि से प्रसिद्ध सिख कलाकारों की कलाकृतियों जिनमें गुरू तेग़ बहादुर जी के प्रभावशाली व अनूठे चित्र जो उनकी आध्यात्मिकता, वीरता और कोमल ह्रदय को दर्शाते हैं का उल्लेख है। आपके धर्म निष्पक्षता की रक्षा करते हुए बलिदान देने की गाथा को उजागर किया गया है। यह उनके उच्च बलिदान को स्मरण करने की महत्वता पर भी रोशनी डालता है।

मुख्य शब्दः *श्री गुरू तेग़ बहादुर जी, सिख कला, हिन्द की चादर, गुरू गोबिंद सिंह जी, भाई बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, हिन्दू धर्म, राजा चंकरध्वज, राजा राम सिंह, भाई जैता जी, भाई दयाला जी, भाई मति दास जी, भाई सती दास जी, चाँदनी चौंक, दिल्ली, माखन शाह लुबाना।*

प्रस्तावना

'हिन्द की चादर' कहलवाने वाले नौवें सिख गुरू– **'श्री गुरू तेग़ बहादुर जी'** का 400वां प्रकाश उत्सव इस वर्ष पूरे भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में जहाँ–जहाँ भी सिख समुदाय बसा हुआ है के द्वारा सम्पूर्ण श्रद्धा तथा भक्ति –भाव से मनाया जा रहा है। भारत सरकार ने भी इस उपलक्ष्य में अनेको–अनेक कार्यक्रम उनकी स्मृति व मार्गदर्शन को उजागर करने का आयोजन करने हेतु का बीड़ा उठाया है। स्मरण रहे श्री गुरू तेग़ बहादुर जी का जन्म 1 अप्रैल,1621 में **'स्वर्ण–मंदिर'** की धरती–अमृतसर में सिखों के छठे गुरू– **श्री गुरू हरगोबिन्द साहिब जी** के घर में हुआ और गुरू तेग़ बहादुर जी '**दशमपिता–बाल गोबिन्द**

राय (श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी)' के पिता थे।[1] आप एक उच्च कोटि के कवि, दार्शनिक, संत, शूरवीर सिपाही व मानविय अधिकारों के रक्षक व प्रचारक थे। श्री गुरू तेग़ बहादुर जी ने हिंदुओं के धार्मिक अधिकारों की रक्षा करते हुऐ अपने शीश का बलिदान श्री शीशगंज साहिब के निकट चाँदनी चौंक दिल्ली में 11 नवम्बर, 1675 में दिया।[2] आपको 'हिन्द की चादर' होने का सम्मान इसलिए प्रदान किया गया, जब कट्टर व क्रूर मुगल सम्राट–औरंगज़ेब के अमानविय अत्याचार दिन–प्रतिदिन बढ़ने लगे तथा हिन्दुओं का ज़बरदस्ती धर्म परिवर्तन करके उन्हें मुसलमान बनाए जाने का अभियान षुरू हुआ। इतिहास गवाह है की औरंगज़ेब ने ठान रखी थी कि वह तब ही खाना खाएगा जब वह हिन्दुओं के सवा मन जनेऊ उतार कर उन्हें मुसलमान बनाएगा। इन अत्याचारों से दुःखी होकर कश्मीर क सैकड़ों पंडित श्री गुरू तेग़ बहादुर जी के दरबार में पहुँचे तथा उनसे आग्रह किया कि वह उनके धर्म की रक्षा करें। गुरू जी ने उनके धर्म रक्षक होने का दायित्व अपने ऊपर लिया जब बाल गुरू गोबिन्द सिंह ने अपने पिता से आग्रह किया की आप से बड़ा कौन बलिदानी हो सकता है जो इन मासूम व पवित्र लोगों के धर्म की रक्षा करने में सक्षम हो। गुरू जी ने औरंगज़ेब को कहलवाया की अगर वह उनका धर्म परिवर्तित कर देगा तब ही वह सारे अन्य कश्मीरी पंडितों का धर्म परिवर्तित कर सकेगा। इस पर क्रूर औरंगज़ेब आग बबुला हो गया तथा गुरू जी को कैद करके दिल्ली के चाँदनी चौंक में उनके अनुयायियों के साथ लाया गया। उन्हें प्रथमत् हर प्रकार के प्रलोभन दिए गए की वह अपना धर्म त्याग कर इस्लाम को कुबुल कर लें। गुरू जी ने यह सब स्वीकार नहीं किया तब उनकी आँखों के सामने उनके अनुयायियों को जिंदा जला दिया गया व बड़े–बड़े आरों से उनके शीश चिरवाए गए तथा उनके अंग–अंग कटवाए गए जिनमें **'भाई दयाला जी,' 'भाई मति दास जी'** और **'भाई सती दास जी'** प्रमुख शहीद हैं। 11 नवंबर, 1675 में गुरू जी ने अपने शीश का बलिदान देकर हिन्दुओं के तिलक व जनेऊ की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। इस प्रकार अनेका–अनेक कश्मीरी पडिंतों के धर्म की सुरक्षा की गई।[3]

श्री गुरू तेग़ बहादुर जी को **भाई बुड्ढा जी** और **भाई गुरदास जी** ने प्राथमिक धार्मिक व युद्ध कला की शिक्षा प्रदान की थी। **'तेग़ बहादुर'** का अर्थ का तात्पर्य है की जो **'तेग़' (कृपाण)** का धनी ही व रक्षक हो। आप ने बहुत से अमानविय अन्यायों का खण्डन किया व मानविय विचारों का संचालन किया। आपने भक्ति रस में ओत–प्रोत कई रचनाओं का सृजन किया जिसमें 59 शब्द व 57 श्लोक पवित्र **'श्री गुरू ग्रन्थ साहिब'** में प्रतिष्ठापित हैं।[4] आपने पूरे भारत वर्ष में कई राज्यों में जाकर शाँति व धर्म का प्रचार तथा समय–समय पर अपनी कृपाण की कला के जौहर से अनुशासन व शाँति की स्थापना का भार अपने कंधों पर उठाया यहाँ तक की असम के कई राजा जो आपस में उलझते रहते थे तथा मुगलों के सामने कमज़ोर पड़ जाते थे, उन राजाओं में से अहोम के **'राजा चंकरध्वज'** और **'राजा राम सिंह'** का अपनी कूटनीति व सूझ–बूझ से समझौता करवा कर उनकी मुगलों के विरूद्ध ताक़त को बढ़ावा दिया था।

श्री गुरू तेग बहादुर जी के जीवन काल की प्रमुख घटनाओं व उनके मानविय व आध्यात्मिक दर्शन और शाँति के पुंज होने के विषयों पर बेशुमार प्रसिद्ध सिख चित्रकारों ने अपनी

अनूठी कलाकृतियों द्वारा बाखूबी ढंग से चित्रण किया है। यह चित्र यथार्थवादी पश्चिमी शैली में प्रचलित तकनीक व कथा शैली को अपनाते हुए एक प्रभावशाली ढंग से विशेष घटनाओं को ब्यान करते है। हर चित्र अपने आप में एक अनूठी छाप छोड़ने की श्रमता रखता है क्योंकि जिन चित्रकारों ने इन्हें उकेरा उन्होंने बहुत ही भक्ति–भाव से सरोभोर होकर तथा इतिहास के पन्नों की सूक्ष्म दृष्टि से छानबीन करते हुए उस काल की वेशभूषा, वातावरण की सच्चाई का ईमानदारी से अध्ययन करके अपनी उच्चतम कला शैली का प्रमाण दिया है। यह चित्र इन सिख चित्रकारों के लिए केवल कला ही नहीं अपितु दिव्य साधना का एक रूप है।

विख्यात शिरोमणि चित्रकार– **'सरदार सोभा सिंह'** ने गुरू तेग़ बहादुर जी का एक भव्य मित्र ऑयल ऑन केनवास तकनीक में गुरू जी को आध्यात्मिक साधना व दिव्य विचारों में लीन दर्शाया है।[5] **(1)** उनके चहरे पर अद्‌भुत दिव्य रोशनी का संचार है तथा वह हाथ जोड़कर शाँत मुद्रा में ईश्वर का जाप करते दिख रहे हैं। एक तरफ एक दीपक की लौ की ज्योति को ज्ञान के दर्शन के चिन्ह के रूप में दिखाया है जो अंधकार को पीछे छोड़कर ज्ञान की लालिमा का संचार करती प्रतीत होती है। सरदार सोभा सिंह की कला बेमिसाल है तथा उन्होंने बहुत ही सहज ढंग से गुरू जी के चहरे और आँखों को एक ईश्वरीय कण प्रदान करते हुए अपने ब्रश की जादुई छोह से एक ऐसे चित्र की रचना की है जिसको घर–घर में आदरपूर्वक उचित स्थानों पर सजाया जाता है।

सिख इतिहास के सुनहरी पन्नों में से एक चित्र सदा याद रहेगा जिसको बहुत ही संजीदा चित्रकार – **'मास्टर गुरदित्त सिंह'** ने बनाया।[6] इसमें उन्होंने मषहूर सोदागर– **'माखन शाह लुबाना'** को दर्शाया है जो एक बड़ा व्यापारी था और अक्सर अपने जहाज़ व कश्तियाँ लेकर दूसरे देशों में जाकर अपने सामान का व्यापार करता था। घटना यह हुई की एक बार जब वह अपना सामान से लदा जहाज़ लेकर व्यापार करने जा रहा था तब समुन्दर में बहुत भयंकर तूफान व आँधी आने लगी तथा जहाज़ डूबने की कगार पर था। तब उसने ईश्वर का स्मरण करते हुए प्रार्थना की कि अगर उसका जहाज़ सही सलामत किनारे पर पहुँच जाएगा तो वह सोने की सौ मोहरें दान करेगा। तूफान थम गया तथा वह सुरक्षित किनारे पर पहुँच गया। वहाँ उसने ईश्वर का शुक्रिया करते हुए किनारे पर उपस्थित कई संतों को एक–एक सोने की मोहर दान करने लगा। तब वह गुरू तेग़ बहादुर जी तक पहुँचा व एक मोहर उन्हें भी प्रदान करने लगा। गुरू जी ने उसकी ओर देखते हुए कहा, *''माखन शाह तुमने तो सौ मोहरें दान करने का प्रण किया था।''* येह सुनकर माखन शाह हैरान होकर हक्का –बक्का रह गया। उसे एहसास हुआ की वह तो एक दिव्य गुरू के आगे खड़ा है। यह वह ईश्वर का सच्चा व पवित्र रूप है जिसका स्मरण करके उसने सौ मोहरें देने का प्रण लिया था। वह भाग कर चौबारे पर चड़ गया तथा ज़ोर से अपनी खुशी का अहसास करते हुए कहने लगा, *''गुरू लाधों रे, गुरू लाधो रे (असली गुरू मिल गए)।''* **(2)** सम्पूर्ण चित्र एक ईश्वरिय रोशनी से जगमगा रहा जिसके मध्य में माखन शाह लुबाना को भक्ति रस में ओत–प्रोत अपना हाथ उठाकर आकाश की ओर फहरा रहा है चित्र के दाहिने और 'गोइंदवाल साहिब' शहर का चित्रण है तथा बाई ओर अनेक संत नदी के किनारे उपस्थित

हैं और दूर माखन शाह लुबाना का जहाज़ लहरों पर तैर रहा है। चौबारे के नीचे श्री गुरू तेग़ बहादुर जी भक्ति में लीन विराजमान है। पूरा चित्र ही मनमोहक तथा भक्ति रस से सराभोर है।

उच्च श्रेणी के सिख चित्रकारों में से **'जी.एस.सोहन सिंह'** का नाम भी सिख कला में बड़े आदर सहित लिया जाता है क्योंकि उन्होंने भी सिख इतिहास को चित्रित करने में अपना पूरा जीवन समर्पित किया। ब्रश व रंगों के धनी होने के साथ–साथ वह एक शांत स्वभाव के सरल किंतु कला कौशल से भरपूर व्यक्ति थे। उनके बहुत स प्रचलित चित्रों में से एक में उन्होंने श्री गुरू तेग़ बहादुर जी के दरबार का दृश्य दर्शाया है जहाँ वह अपने होनहार पुत्र बाल गोबिन्द राय (गुरू गोबिन्द सिंह) के साथ विराजमान हैं तथा उत्सुकता व गंभीरता से कश्मीरी पंडितों के दुःख दर्द व उन पर औरंगज़ेब द्वारा की गई यातनाओं की फ़रियाद को सुन रहे हैं। उनके तख्त के पीछे उनके शिष्य व अनुयाई भी गंभीरता से इस दुःख भरी कहानी को सुन रहे हैं।**(3)** चित्र में कश्मीरीयों व सिख समुदाय के वस्त्रों का एक सच्चा–सुच्चा चित्रण है तथा हर चहरे के हाव–भाव बहुत ही यर्थाथवादी हैं। इस चित्र के ऊपरी तरफ पहाड़ों के दृश्य का खूबसूरत चित्रांकन है। नन्हें बाल गोबिन्द राय (गुरू गोबिन्द सिंह) अपने पिता की ओर मुडते हुए उन्हें कश्मीरी पडिंतों के दुःख दर्द हटाने का आग्रह करते दिखाई दे रहे हैं और कह रहे हैं, *''आप से बड़ा कौन महापुरूष होगा जो अपना शीश देकर इन मासूम व लाचार कश्मीरी पडिंतों के धर्म की रक्षा कर सकता है।''* चित्र का कलात्मक वर्णन व शैली अद्भुत है तथा दर्शकों पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ने की श्रमता रखता है।[7]

सिख इतिहास के एक और प्रमुख चितेरे– **'सरदार कृपाल सिंह'** द्वारा चित्रित दृश्य में चित्रकार ने श्री गुरू तेगे़ बहादुर जी को दिल्ली के चाँदनी चौंक में बैठे हुए दिखाया है तथा उनको मुगल सेना व काज़ी और हाकमों ने घेर कर उन्हें बार–बार इस्लाम कुबूल करने का आग्रह कर रहे है, *''या तो इस्लाम कुबूल कर लो, या अपना शीश दे दो।''* **(4)** यह चित्र भी बहुत मार्मिक व अनूठी विधा में चित्रित है। जहाँ गुरू जी एक आध्यात्मिक साधना में लीन बैठे हैं तथा क्रूर व खूंखार मुगल सेना उनके आस–पास खड़ी है। गुरू जी ने अपना शीश देना उचित समझा ताकि हिन्दु धर्म की रक्षा की जा सके। यह चित्र भी ऑयल ऑन कैनवास माध्यम में बना हुआ है तथा समय काल के सम्पूर्ण वातावरण को बाखूबी ब्यान करता है।[8]

चित्रकार **जसवंत सिंह** के चित्र में श्री गुरू तेग़ बहादुर जो को पिंजरेनुमा कंटीली तारों से लिपटे अड़िग विराजमान हुए दिखाया है जब मुगल सेना उन्हें बंधी बना कर दिल्ली ले जा रही थी।[9] गुरू जी के चहरे पर आध्यात्मिक विश्वास व धैर्य की लालिमा है तथा वह शांत व भक्ति –भाव में हैं। इस दृश्य में पिंजरे के बाहर सोए मुगल सिपाही रात के आखरी पैहरों का अहसास दिलवाते हैं।**(5)** जसवंत सिंह ने भी सिख इतिहास के कई पन्नों को अपने चित्रों में उजागर किया है। वह भी अपनी कला कौशल के धनी थे। सरल भाव व विषय–विशेष रंग संयोजन का चुनाव करना उनकी खासियत थी।

भयंकर तूफान, बारिश तथा आंधी के चलते हुए जंगलों में भटकते 'भाई जैता जी' श्री गुरू तेग़ बहादुर जी का शीश पूर्ण आदर सम्मान से एक वस्त्र में ढक कर चाँदनी चौंक, दिल्ली

से श्री आनंदपुर साहिब की ओर तेज़ कदमों से चलते जा रहे दिखाया गया है एक अद्भुत तथा प्रभावशाली चित्र है जिसके चितेरे भी मशहूर सिख इतिहास के चित्रकार **'सरदार त्रिलोक सिंह चित्रकार'**। सिख चित्रकार की कल्पना व आंधी भरे जंगल के दृष्य का कलात्मक वर्णन बहुत ही दिल को छू लेने वाला तथा धार्मिक भावनाओं से ओत–प्रोत है। चित्रकार की भू–दृश्य बनाने की कला अद्वितीय है। इस चित्र में तूफ़ान से उड़ते पेड़, पौधे बहुत ही नाटकीय तथा वैभवशाली तकनीक में दर्षाए गए हैं।**(6)** सिख कला इतिहास में इस चित्र को सदैव स्मरण किया जाता रहेगा इसकी अनूठी व प्रभावशाली शैली के कारण।[10]

श्री गुरू तेग़ बहादुर जी के जीवन काल की घटनाओं में से एक अन्य प्रमुख चित्र है जिसे **'सरदार अमोलक सिंह'** ने बनाया जिसमें उन्होंने गुरू जी के सन्मुख असम के अहोम जनजाति के राजा चंकरध्वज को राजा राम सिंह से मिलवाकर सुलह करवाई व संधि की के हमने आपस में नहीं लड़ना बल्कि क्रूर औरंजगज़ेब से टक्कर लेनी है जो हिन्दु धर्म का नाश करना चाहता है।[11] इस चित्र में भी शाही अंदाज में विराजमान श्री गुरू तेग़ बहादुर जी राजसी वस्त्र पहनें राजाओं को मिलवाते दिख रहे हैं।**(7)** चित्र का संयोजन कोमल रंगों की आभा में नहाया हुआ है। हर चेहरे पर उचित हाव–भाव विद्यमान तथा शाही माहौल बाखूबी ढंग से पेश किया गया है।

श्री गुरू तेग़ बहादुर जी न केवल शूरवीर ही थे बल्कि एक महान आध्यत्मिक वृति के मालिक भी थे जिन्होंने अपनी सूक्ष्म भावनाओं तथा दिव्य शब्दों में गुरबाणी की रचना भी की। आपको हिन्दु धर्म के रक्षक के प्रतीक के रूप में आने वाली सदियों में भी स्मरण किया जाएगा गुरू जी उन महान शख्सियतों में से थे जिनकी कथनी और करनी एक थी तथा आपने दृढ़ निश्चय से अपने शीश का बलिदान कर दिया। भारत उन्हें 'हिन्द की चादर' से सम्मानित करने में गौरव महसूस करता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. सिंह, हरबंस ; 1998, *द इन्साइक्लोपीडीआ इन सिखीज़म,* वाल्यूम चौथा, पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला, पृ0 **329** ।
2 *वही,* पृ0 **332–333** .
3. *वही,* पृ0 **332।**
4. *वही,* पृ0 **329–333**।
5. वैद्यया, के. एल.; 2001, *सरदार सोभा सिंह– लॉइफ एण्ड कान्ट्रब्यूशन टू इन्डीअन आर्ट,* सोभा सिंह ममोरीअल आर्ट सोसाइअटी, अट्रेटा (पालमपुर), हिमाचल प्रदेश, पृ0 **1–2**
6. सिंह, प्रिंसिपल सतबीर; 1991, *एल्बम सेंट्रल सिख म्यूज़ीअम,* अमृतसर, श्री दरबार साहिब, अमृतसर, गोल्डन आफसेट प्रेस, अमृतसर, पृ0 **26**
7. दिल्ली सिख गुरूद्वारा मैनेजमेंट कमेटी और धर्म प्रचार कमेटी, नई दिल्ली ; 1998, *बाबा बघेल सिंह म्यूज़ीअम पेटिंगज़ एण्ड देअर ब्रीफ हिस्ट्री,* सरदार अजीत सिंह, गुर–उपदेश प्रिंटरज़, नई दिल्ली, पृ0 **26**

8. सिंह, प्रिसिंपल सतबीर ; 1991, *एल्बल सेंट्रल सिख म्यूज़ीअम*, अमृतसर, श्री दरबार साहिब, अमृतसर, गोल्डन ऑफसेट प्रेस, अमृतसर, पृ0 **27**
9. केसर, उर्मि ; जून 2003, *ट्वेन्टीइथ– सेन्चरी सिख पेंटिग–द प्रेज़न्स ऑफ द पास्ट*। इन कविता सिंह, इड़ी *न्यू इन्साइट इन्टू सिख आर्ट*, मार्ग पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ0 **125**
10. रानी, डॉ0 सरोज ; 2001, *द रीअलिस्टिक आर्टिस्ट प्रोम पंजाब*, पंजाब ललित कला अकादमी, चण्डीगढ़ और लोकायत प्रकाशन, चण्डीगढ़, पृ0 **132–133**
11. बैंस, के. एस ; 1995, *सिख हैरिटेज इन पेटिंग*, पर्फेक्ट प्रेस, नई दिल्ली, पृ0 **66**

Plate-1

Plate-2

Plate-3

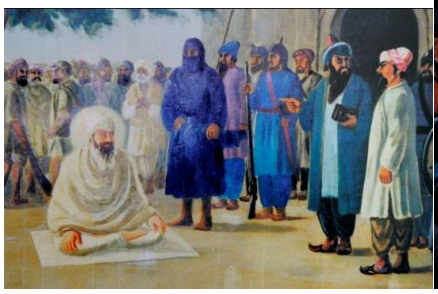

Plate-4

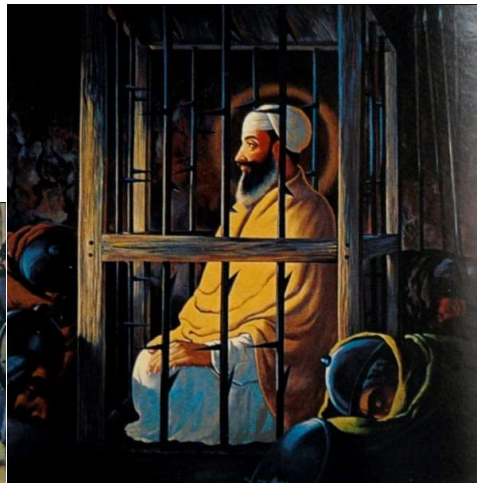

Plate-5

Plate-6

Plate-7